SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

झारखंड मुक्ति मोर्चा का उद्भव, विकास तथा उपलब्धियां (1973 – 2020)

प्रभात कुमार साहा, शोधार्थी, इतिहास विभाग
अशोक कुमार मंडल, (Ph.D.) शोध निदेशक, इतिहास विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
प्रभात कुमार साहा
अशोक कुमार मंडल (Ph.D.)

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/05/2023
Revised on : -----
Accepted on : 25/05/2023
Plagiarism : 02% on 17/05/2023

शोध सार

झारखंड राज्य को अलग राज्य का दर्जा दिलाने के लिए जो राजनीतिक दलों का गठन किया गया उनमें से एक था "झारखंड मुक्ति मोर्चा"। झारखंड राज्य निर्माण को लेकर काफी लंबे समय से आंदोलन चलाए जा रहे थे,इस आंदोलन के संघर्ष और बलिदान की कहानी बहुत लंबी है। इस आंदोलन को सफल बनाने हेतु कई लोगों की अपनी भूमिका रही है, जिन्होंने अपने संघर्ष, त्याग और बलिदान के फलस्वरुप झारखंड राज्य निर्माण में सफलता प्राप्त की है। झारखंड मुक्ति मोर्चा बीसवीं शताब्दी के अंतिम 3 दशकों से भी अधिक समय में झारखंड राज्य का एकमात्र सक्रिय राजनीतिक दल है, जो झारखंड अलग राज्य निर्माण से पूर्व से लगातार प्रयासरत् होने के साथ–साथ राज्य निर्माण के पश्चात् भी सक्रिय है। झारखंड क्षेत्र में अन्य भी कई राजनीतिक दल थे, जिन्होंने अलग राज्य निर्माण की मांग को लेकर खुद को झारखंड आंदोलन से जोड़ने का प्रयास किया किंतु वक्त और राजनीतिक पुनर्गठन की सतत् प्रक्रिया में उनमें से कई सक्रिय राजनीतिक दल परिदृश्य से गायब होते चले गए और झारखंड मुक्ति मोर्चा झारखण्ड में एकमात्र ऐसा राजनीतिक दल रहा जो वर्तमान परिदृश्य में भी सफलतापूर्वक सक्रिय है। झारखंड मुक्ति मोर्चा ने इस बात पर अधिक ध्यान दिया है कि विकेंद्रीकरण स्वयं केंद्र तथा राज्य के बीच ना होकर बिहार के पहाड़ी तथा आदिवासी क्षेत्रों के विशिष्ट संदर्भ में राज्य की विषमता, आशा, मानव विकास तथा बहुसांस्कृतिक चरित्र को देखते हुए जिला और जिलों के बीच भी होना चाहिए जो अब राज्य और केंद्र की बौद्धिक कॉलोनी के रूप में अस्तित्व में है।

मुख्य शब्द

झारखंड मुक्ति मोर्चा, आंदोलन, कार्यक्रम, संघर्ष, जनजातीय समाज, संविधान.

झारखंड मुक्ति मोर्चा का उद्भव

झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन का मुख्य उद्देश्य झारखंड राज्य का निर्माण था। झारखंड राज्य निर्माण में झारखंड मुक्ति मोर्चा ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। झारखंड मुक्ति मोर्चा ने अपनी संविधान के प्रस्तावना में यह घोषणा किया है कि "झारखंड मुक्ति मोर्चा श्रमिकों किसानों, छात्रों, युवाओं, महिलाओं और सभी शोषित और पीड़ित लोगों की स्वतंत्र इच्छा से गठित एक राजनीतिक संगठन है। इसका उद्देश्य झारखंड के राज्य की स्वायत्तता प्राप्त करना है, जिसके लिए झारखंड मुक्ति मोर्चा ने एक साथ संगठन के रूप में अपनी शुरुआत की और तत्कालीन मुद्दों से निपटा यह किसी भी दलीय राजनीति से मुक्त था।"[1] लेकिन इसके गठन के लगभग 7 वर्षों के भीतर यह राजनीतिक संगठन के रूप में उभर कर सामने आया।

झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन के पीछे एक लंबी संघर्ष की कहानी है,जिसमें तीन समान विचारधाराओं जो अलग–अलग रास्तों के माध्यम से एक ही लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ रहे थे। उन विचारधाराओं का एक साथ एक रास्ते पर चलने तथा मिलने की कहानी या परिणाम स्वरूप झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन हुआ है। "झारखंड मुक्ति मोर्चा के गठन के पीछे कई लोगों का दिमाग काम कर रहा था जिनमें से मुख्य रूप से यह तीन लोग सामने आए विनोद बिहारी महतो, शिबू सोरेन तथा ए० के० रॉय तीनों समाज सुधारक थे तथा धनबाद के आसपास के क्षेत्र में तीनों पहले से अलग–अलग तरीकों से अलग–अलग संगठन के साथ समाज में सुधार करने में अपनी–अपनी महत्वपूर्ण सक्रिय भूमिका निभा रहे थे।"[2] बिनोद बिहारी महतो धनबाद के एक अधिवक्ता के साथ–साथ एक समाज सुधारक भी थे। समाज के विकास हेतु उन्होंने अपना एक संगठन भी बनाया था जो मुख्य रूप से कुर्मी समुदाय के विकास के लिए काम कर रहे थे। "कुर्मी समुदाय में जो सामाजिक बुराइयां थी उसे दूर करने तथा शिक्षा के प्रचार–प्रसार करने में उनका संगठन लगा हुआ था। यह संगठन का नाम "शिवाजी समाज" था जिसका गठन बिनोद बिहारी महतो ने 6 अप्रैल 1969 को तोपचांची में किया था। बिनोद बिहारी महतो अपने क्षेत्र में खासकर कुर्मी समुदाय में काफी लोकप्रियता हासिल किए। वह पहले सी. पी. एम. से जुड़े हुए थे,जिसके टिकट पर सन् 1971 में धनबाद लोकसभा चुनाव भी लड़ चुके थे। बाद में झारखंड अलग राज्य निर्माण के प्रबल समर्थक होने के कारण उन्हें सी० पी. एम. से अलग होना पड़ा।"[3] और इस घटना के बाद बिनोद बिहारी महतो का पूरा समय ''शिवाजी समाज'' के काम को आगे बढ़ाने में लगने लगा। इस तरह से उनका क्षेत्र धीरे–धीरे धनबाद से बढ़ता हुआ गिरिडीह बोकारो और हजारीबाग तक विस्तार होता गया। एक तरफ विनोद बिहारी महतो कुर्मी समुदाय के सामाजिक तथा आर्थिक विकास के लिए लोगों को जागरूक करने में लगे हुए थे और दूसरी तरफ शिबू सोरेन आदिवासी समुदाय के लिए महाजनों तथा शासकों के विरुद्ध अभियान चला रहे थे। "समाज में चल रहे बुराइयों को दूर करने के लिए लोगों को जागरूक करने के साथ–साथ आदिवासियों के लिए शिक्षा का प्रचार–प्रसार तथा शराबबंदी के लिए भी प्रयासरत् थे। उन्होंने सामूहिक कृषि, धान कटनी आंदोलन, रात्रि पाठशाला जैसे अन्य कई समाज सुधार अभियानो का सफलतापूर्वक संचालन किये। इन सभी कार्यों के कारण उनका क्षेत्र गोला से बढ़कर बोकारो तथा आसपास के क्षेत्रों तक फैल गया। शिबू सोरेन की विनोद बिहारी महतो से अच्छी तरह से जान पहचान धनबाद में हुआ। शिबू सोरेन अपना आश्रम धनबाद के पोखरिया (टुंडी) में बनाए थे।"[4] बिनोद बिहारी महतो का ए. के. रॉय से परिचय काफी पहले से ही था, दोनों एक साथ सी. पी. एम. में ए. के. रॉय धनबाद के खाद्यान्न मजदूरों पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष कर रहे थे।

धनबाद के खदानों पर बिहार के बाहरी राज्यों के माफियाओं का दबदबा चलता था तथा मजदूरों का जमकर शोषण किया जा रहा था। इस वजह से ए. के. राय ने अपनी इंजीनियर की पद का त्याग करके सभी मजदूरों को एकजुट किया तथा माफिया के खिलाफ आंदोलन करना प्रारंभ कर चुके थे, जिससे वह भी एक मजदूर नेता के रूप में लोकप्रिय थे। शिबू सोरेन तथा बिनोद बिहारी महतो दोनों का उद्देश्य एक ही था तथा दोनों के कार्य क्षेत्र में विस्तार

होने के कारण वे एक दूसरे को करीब से जानने लगे थे तथा ए. के. राय जो बिनोद बिहारी महतो के काफी करीबी थे "तीनों ने मिलकर एक ही संगठन बनाने का फैसला लिया तथा 4 फरवरी 1972 को विनोद बिहारी महतो के आवास पर एक बैठक हुई जिसमें शिबू सोरेन की नेतृत्व वाली "सनोत संथाल" समाज तथा विनोद बिहारी महतो के नेतृत्व वाली "शिवाजी समाज" दोनों संगठनों का विलय कर दिया गया और एक नया संगठन का निर्माण किया गया जिसका नाम "झारखंड मुक्ति मोर्चा" सर्वसम्मति से रखा गया। इसी बैठक में सर्वसम्मति से विनोद बिहारी महतो को अध्यक्ष, पूर्णेन्दु नारायण सिंह को उपाध्यक्ष एवं शिबू सोरेन को महासचिव बनाने का फैसला लिया गया। इस बैठक में मजदूर नेता ए. के. रॉय, टेकलाल महतो तथा अन्य कई आंदोलनकारी नेता उपस्थित थे।"[5] इस तरह से झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का गठन हुआ।

शिबू सोरेन लगातार महाजनों तथा सूदखोरों के खिलाफ अपना आंदोलन चला रहे थे, जिसके कारण महाजनों तथा पुलिस ने शिबू सोरेन तथा उसके सहयोगियों को जान से मारने का प्रयास किया। उन्होंने टुंडी में अपना आश्रम बनाया था। "आश्रम के पास "पलमा" नामक स्थान पर शिबू सोरेन तथा अन्य लोगों ने एक बैठक का आयोजन किया। किसी कारणवश शिबू सोरेन वहां उपस्थित नहीं थे तथा बैठक के दौरान पुलिस के अचानक पहुंचने और फायरिंग करने के कारण 23 मार्च 1972 को शिबू सोरेन के चार सहयोगी अमूल्य सेन, रतीलाल मुर्मू, सागर सोरेन और बलि मियां की मौत हो गई। ऐसे कई फायरिंग हुई जिसमें लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी।"[6] लोगों ने पलमा में ही उन चारो शहीद हुए आंदोलनकारियो का स्मारक बनवाया जहाँ आज भी हर साल उनकी पुण्य तिथि पर उनकी याद में खेल और मेले का आयोजन किया जाता है।

"झारखंड मुक्ति मोर्चा का प्रथम महाधिवेशन 1–2 जनवरी 1983 को धनबाद में संपन्न हुआ, जिसमें झारखंड मुक्ति मोर्चा ने अपने संविधान पारित किया गया जिसमें प्रस्तावना समेत 24 धाराएं है जो 18 पन्नों में पारित किया गया और आवश्यकता अनुसार समय–समय पर इस संविधान में संशोधन भी किए गए। इस तरह अब तक कुल 7 महाधिवेशनो का आयोजन किया जा चुका है, जिसमें अंतिम महाधिवेशन जो सप्तम महाधिवेशन है। 26, 27, 28 जून 2003 को बाबा तिलका मांझी आश्रम, डिमना लेक, जमशेदपुर, पूर्वी सिंहभूम,झारखंड में आयोजित किया गया था जिसमें झारखंड मुक्ति मोर्चा का अंतिम संशोधित संविधान पारित किया गया।"[7] संविधान जनसाधारण एवं लोकहित को ध्यान में रखकर उन सभी बातों को समाहित करता है। झारखंड मुक्ति मोर्चा के संविधान के प्रस्तावना में यह बताया गया है कि झारखंड मुक्ति मोर्चा झारखंड की शोषित पीड़ित एवं पहचान के लिए संघर्षरत् संघर्षशील, प्रगतिशील, विवेकपूर्ण एवं उच्च आदर्शों वाली जनता की एक राजनीतिक संगठन है।

झारखंड मुक्ति मोर्चा मजदूरों, किसानों, छात्रों, नौजवानों, महिलाओं, बुद्धिजीवी एवं समस्त शोषित जनता की सुरक्षा से निर्मित संगठन है, जिसका लक्ष्य झारखंड की पहचान हासिल कर एवं एक समृद्ध झारखंड राज्य निर्माण करना है। झारखंड मुक्ति मोर्चा अपने क्रियाकलापों को संगठन के अंदर पूर्ण जनवाद पर आधारित जनवादी केंद्रीयता के सिद्धांत के अंदर पार्टी को रखने का प्रयास किया, तथा जनता का सच्चा प्रेम मोर्चा के लक्ष्य प्राप्ति का एकमात्र स्रोत था। संगठन के अंदर सामूहिक नेतृत्व कार्यकर्ताओं पर आधारित जो जनता से सच्चे अर्थों में जुड़े होते थे उन्हें प्राथमिकता देना मोर्चा के संगठनों का मूलभूत सिद्धांत था। एकता बाद सक्रिय, सचेत, अनुशासित, जुझारू प्रवृत्ति और निस्वार्थ भाव से जनता की सेवा और दुश्मन से नफरत मोर्चा के संगठित आधार की मजबूत कड़ियां थी।"[8] इन सभी कड़ियो की सहायता से संगठन काफी मजबूती से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता गया और सफलता तक पहुँच पाया।

झारखंड मुक्ति मोर्चा की उपलब्धियां एवं कार्यक्रम

शिबू सोरेन झारखंड में सामाजिक उत्थान एवं आत्मनिर्भरता की ओर ध्यान देते हुए कई सारे कार्यक्रमों का आयोजन किये। "इन कार्यक्रमों को 19 सूत्री कार्यक्रम के नाम से जाना जाता है जो काफी कारगर भी साबित हुए। वहीं उन्हें कुछ हालातों में लोगों की अज्ञानता के कारण कुछ विरोधी का भी सामना करना पड़ा किंतु सामाजिक विकास एवं आदिवासी समुदाय को जागरूक एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए उन्होंने विरोध का भी सामना करते हुए

अज्ञानता तथा कुरीतियों के उन्मूलन हेतु सभी तरह के संभव प्रयास सफलतापूर्वक किए। समाज को जागरूक एवं प्रगतिशील बनाने हेतु जितने कार्यक्रम या आंदोलन की आवश्यकता थी। शिबू सोरेन ने उन्हें क्रियान्वयन करने का भरपूर प्रयास किया।"[9] और जहां तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का 20 सूत्री कार्यक्रम चलाया गया उसी समय शिबू सोरेन के 19 सूत्री कार्यक्रम भी चलाया गया जिसमें तत्कालीन सामाजिक सुधारों के लिए यह 19 सूत्री कार्यक्रम का गठन किया गया।

शिबू सोरेन के 19 सूत्री कार्यक्रम में प्रत्येक कार्यक्रम का एक–एक विशेषज्ञों को जिम्मेवारी दी गई एवं सुचारू रूप से चलाया गया ताकि समाज में व्याप्त बुराइयों का उन्मूलन किया जा सके और समाज को शिक्षित, आत्मनिर्भर बनाया जा सके। कार्यक्रमों में पर्यावरण के संरक्षण हेतु, पौधा संरक्षण, बगीचे का निर्माण, जंगल की रक्षा करना, आदि थे। लोगों को आत्मनिर्भर होने के लिए सामूहिक खेती, जिसमें रवी और खरीफ फसल अनिवार्य, कुटीर उद्योग, महिला शिल्प कला केंद्र, सामूहिक पशु फार्म, (मुर्गी, बकरी, गाय आदि का पालन) तालाब में मछली का पालन, आदि इसके अतिरिक्त कुछ कुप्रथाओं पर भी रोक लगाने हेतु कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें दहेज प्रथा पर प्रतिबंध, बाल विवाह पर रोक, शराबबंदी अनिवार्य, शादी और भोज पर कम से कम खर्च करना, आदि था। कुछ कार्यक्रमों का संचालन मनोरंजन और स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए भी उन्होंने किया जिसमें से अस्पताल का निर्माण, जगह–जगह वाचनालय, संगीतालय और नाटक आदि के कार्यक्रम भी चलाए गए। इसके बाद कुछ कार्यक्रम शिक्षा हेतु थे जिनमें रात्रि पाठशाला (अकिल अखड़ा), किसान पुस्तकालय आदि के निर्माण किए गए।

इन सभी कार्यक्रमों के अलावा सामाजिक सुधार को ध्यान में रखते हुए उन्होंने "राशन की निगरानी, रास्तों की मरम्मतीकरण, वाद विवाद सुलझाने हेतु चेतन मेसी (स्थानीय न्यायालय) आदि का निर्माण उन्होंने समाज के स्वरूप का परिवर्तन करते हुए विकास की ओर ले जाने का सफल प्रयास किया। सारे कार्यक्रम का मिलाजुला निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि "शिबू सोरेन द्वारा चलाए गए कार्यक्रम सफलतापूर्वक प्रभाव दिखाते हुए समाज में विकास की ओर किया गया। अखिल अखंड के विचारधारा को सफलतापूर्वक धरातल पर लाने के बाद, लोग प्यार से "गुरुजी" का आदर शब्द से नवाजने लगे।"[10] वैसे तो शिबू सोरेन को लोग कई आदर सब्दों या उपनामों से बुलाया करते थे, किन्तु "गुरुजी" या "दिशोम गुरु" शब्द आज भी प्रचालन में है।

शिबू सोरेन के द्वारा चलाए जाने वाले 19 सूत्री कार्यक्रम जो झारखंड मुक्ति मोर्चा के निर्माण से पूर्व ही शिबू सोरेन अपने व्यक्तिगत और संगठन के माध्यम से समाज सुधार एवं शोषित वर्गों को बचाने के लिए सामाजिक विकास की दृष्टिकोण से चला रहे थे। उन कार्यक्रमों को झारखंड मुक्ति मोर्चा पार्टी का निर्माण के पश्चात् "झारखंड मुक्ति मोर्चा का प्रथम महाधिवेशन जब जनवरी 1983 में धनबाद में संपन्न हुआ उस वक्त झारखंड मुक्ति मोर्चा के संविधान में शिबू सोरेन द्वारा चलाए जा रहे वही 19 सूत्री कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया गया, जिसकी चर्चा झारखंड मुक्ति मोर्चा के संविधान में भी है जिसमें 19 अलग–अलग कार्यक्रमों का विवरण दिया गया है।"[11] इस बात से यह निष्कर्ष निकला जा सकता है कि शिबू सोरेन ने अपनी बचपन में समाज सुधार का जो कल्पना लेकर कार्य करना प्राराम्भ किये थे, वह झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के गठन तक भी नही बदला और यही बात संघठन के लोगों का भरोसा बनाये रखने में सहायक साबित हुआ।

शराबबंदी एवं रात्रि पाठशाला

झारखंड में सांस्कृतिक परिवर्तन करने के लिए झारखंड मुक्ति मोर्चा ने समाज के सांस्कृतिक परिवारों पर शराब पीने पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश करते हुए अभियान चलाया। आदिवासी समुदाय शराब पीने तथा अपने दोस्तों या परिवार और रिश्तेदारों के साथ बांटने में कभी पीछे नहीं रहे है। आदिवासी बहुल क्षेत्र होने के कारण यह शराबबंदी उनके संस्कृति के खिलाफ समझे गए तथा संपूर्ण आदिवासी समुदाय के तरफ से शराबबंदी आंदोलन का पुरजोर विरोध हुआ। "झारखंड में जनजातीय समाज में साक्षरता दर काफी कम होने के कारण झारखंड मुक्ति मोर्चा ने रात्रि पाठशाला का आयोजन किया। इस पाठशाला मे रात में पठन–पाठन का कार्य किया जाता था, क्योंकि दिन में सभी अपने जीविकोपार्जन हेतु अपनी निजी कार्यों में व्यस्त रहने के कारण दिन की पाठशाला में असफलता की

संभावना अत्यधिक थी इसलिए रात्रि पाठशाला का आयोजन सफलतापूर्वक संचालन किया गया।"[12] इन स्कूलों को अकिल अखरा के नाम से काफी ख्याति प्राप्त हुई। आमतौर पर स्कूली शिक्षक के कुछ डिग्री वाले युवा पढ़ाने का कार्य किया करते थे जिनमें से एक का नाम मुख्यता देखने को मिलता है जिनका नाम है,राजेंद्र प्रसाद तिवारी जो शिबू सोरेन के काफी करीबी मित्र थे वे टुंडी के पूर्णा डी में रहते थे।

शिबू सोरेन के आंदोलन में राजेंद्र प्रसाद तिवारी की काफी भागीदारी थी। उस समय उनका मुख्य काम आदिवासियों को शिक्षित करना था। राजेंद्र प्रसाद तिवारी अकिल अखड़ा के माध्यम से बच्चों को घरों से लेकर स्कूल तक पहुंचाने का काम किया करते थे और यह वहां स्कूल में अकिल अखड़ा के माध्यम से बच्चों को पढ़ाने का कार्य करते थे। बाद में वह नवादा में एक शिक्षक बन गए। "राजेंद्र प्रसाद की तरह से कई अन्य शिक्षक भी थे जिन्हें, आदिवासियों एवं गैर आदिवासियों द्वारा सहयोग के रूप में समर्थन प्राप्त हुआ। जहां तक आंकड़ों की चर्चा करें तो 1976 में टुंडी ब्लाक में कुल 129 अखिल अखाड़े थे, जिनमें से प्रत्येक में एक–एक शिक्षक थे अर्थात् शिक्षकों की संख्या थी। इस आधार पर कुल 129 थे, जो पठन–पाठन का कार्य करते थे। जहां तक छात्र–छात्राओं की बात करें तो इन 129 रात्रि विद्यालयों में कुल मिलाकर 6179 छात्र थे जिनमें 4063 छात्र एवं 2116 छात्राएं थी। छात्रों में अत्यधिक संख्या में अनुसूचित जाति और पिछड़े वर्ग के बच्चे पढ़ाई किया करते थे"13 इस प्रकार से अकिल अखडा आदिवासी एवं गैर आदिवासी को सामाजिक रूप से शिक्षा के माध्यम से एकजुट करने में सफलता पूर्वक अतुलनीय प्रयास किया जिसमें झारखंड मुक्ति मोर्चा के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है।

पशुपालन तथा सामूहिक कृषि

झारखंड मुक्ति मोर्चा के गठन के पूर्व भी शिबू सोरेन झारखंड तथा जहां के जनजाति समाज का विकास को लेकर कई प्रयास किए हैं जिसमें पशुपालन तथा सामूहिक खेती से समाज के परिदृश्य को सफलतापूर्वक परिवर्तन करने का प्रयास किया। शिबू सोरेन ने सामूहिक पशुपालन हेतु सार्वजनिक फार्म का निर्माण करवाया तथा सामूहिक खेती के लिए उन्होंने ऐसी जमीनों का चुनाव किया जो जमींदारों से मुक्त करवाए गए थे। इन जमीनों को मुक्त करवाने में काफी संघर्ष करना पड़ा। "यह घटना 1973 कि है, जब झारखंड मुक्ति मोर्चा के शिबू सोरेन तथा अन्य नेता महाजनों से किसानों की जमीन वापस लेने के लिए लड़ाई लड़ रहे थे, जिसमें पुलिस महाजनों के समर्थन में गरीब किसानों से कई मुठभेड़ हुए तथा अंततः पुलिस विनोद बिहारी महतो को गिरफ्तार कर गिरिडीह जेल ले गए थे। यह सूचना शिबू सोरेन को मिलते ही शिबू सोरेन के अगुवाई में झारखंड मुक्ति मोर्चा के समर्थक अपने सभी हथियार लेकर गिरिडीह जिला को चारों तरफ से घेर लिया था। बाद में विनोद बिहारी महतो को तो बरी कर दिया गया किंतु झारखंड मुक्ति मोर्चा के एक ताकतवर नेता दुर्गा तिवारी तथा अन्य कई समर्थक को आजीवन कारावास हो गया।"[14] इस तरह से संघर्ष करने के पश्चात कुछ जमीने जो किसानों को वापस हासिल हुआ। उस जमीनों पर सामूहिक रूप से खेती का कार्यक्रम चलाया जाता था।

अच्छी फसल के लिए छोटी नदियों पर अनेक चेकडेमो का निर्माण करवाया गया। इन चेक डैम का निर्माण गांव के लोगों द्वारा श्रमदान से बनाया गया। स्थानीय जनजातीय समाज को कृषि का प्रशिक्षण दिया गया, अच्छी कीटनाशक एवं उर्वरक की भी व्यवस्था की गई एवं उसके उपयोग का जानकारी दिया गया जो एक कृषि विशेषज्ञ "झगरू पंडित" की देखरेख में होता था। उन्हें प्यार से 'कृषि पंडित' भी बुलाया करते थे। प्रशिक्षण देने का कार्य एवं कृषि संबंधित सभी मामलों का देखरेख पंडित की निगरानी में किया जाता था। प्रशिक्षण के पश्चात् फसल में दोगुनी वृद्धि भी दर्ज किया गया एवं एक जगह दो–दो फसलें होने लगी थी फसलों की प्राप्ति के पश्चात् जमीन के माप के अनुपातिक रूप से लोगों में फसल वितरण का कार्य किया जाता था।

कुल उपज का कुछ भाग में आपातकाल या अकाल के लिए संरक्षित करने का कार्य भी किया करते थे। जहां यह संरक्षण का कार्य किया जाता था, वह अनाज गोला कहलाता था। फसल की कमी होने पर या उपज नहीं होने पर अनाज गोला से अनाज निकाला जाता था। यह अनाज गोला प्रत्येक गांव में आवश्यक रूप से एक होता था जो आपातकाल में उस गांव को अनाज उपलब्ध करवाता था। इससे यह पता चलता है कि यह व्यवस्था काफी हद

तक सफल रहा था। शिबू सोरेन के 19 सूत्री कार्यक्रम में सबसे अधिक सफलता सामूहिक कृषि और सामूहिक पशुपालन में ही देखने को मिलता है, क्योंकि ग्रामीण और पिछड़ा समुदाय होने के कारण वहां के लोग पशुपालन में काफी ध्यान दिए तथा गरीबी से उठने का प्रयास करने हेतु खेती एक मुख्य रास्ता का कार्य किया। कृषि और पशुपालन दोनों ही किसी समाज की सर्वप्रथम आवश्यकता माना जाता है इसलिए संभवतः सामूहिक खेती और पशुपालन में अधिक से अधिक सफलता दर्ज की गई।"[15] शिबू सोरेन टुंडी के आश्रम में लोगों को खेती का विकास करने के लिए खुद प्रशिक्षित करते थे, लोगों को मकई की खेती करना नहीं आता था।

इस बात पर चर्चा करते हुए शिबू सोरेन ने खुद यह कहा है कि "पहले यहां आदिवासी लोग ठीक से खेती करना नहीं जानते थे। कहते थे पानी बरसेगा तो रोप देंगे, अघन में काट लेंगे, पानी नहीं बरसा तो भगवान बिगड़ गया, पानी ज्यादा बरस गया तो भगवान ज्यादा बिगड़ गया। मकई की खेती यह क्या होता है, अच्छा ठीक है, मकई भी बो देंगे, पहले मकई का बीज जो मांझी बोलते थे बिल्कुल घटिया किस्म के होते थे। पहले एक ही खेत में मकई, बाजरा, घाघरा सब रोप देते थे। यह सब कुछ एक खेत में उगाए जाते थे इससे 1 एकड़ खेत में 2 मन मकई, 5 मन बाजरा 10 किलो घागरा हो जाता था और इतना ही लहरा। अब मैंने लोगों को शंकर मकई बीज बोने सिखाया तथा लोग अब 1 एकड़ खेत में लगभग 50 मन मकई ऊपजाता है।"[16] इन आंदोलनों के शुरुआत से ही लेकर अंतिम तक शिबू सोरेन तथा झारखंड मुक्ति मोर्चा को कुछ न कुछ बलिदान करते रहना पड़ा है।

शिबू सोरेन के पिता सोबेरेंन मांझी का हत्या सूदखोरी के खिलाफ आंदोलन करते हुए लड़ाई में किया गया तथा एक बार "शिबू सोरेन को जेल भी जाना पड़ा जिसमें 3 जनवरी 1997 को दिल्ली हाईकोर्ट ने शिबू सोरेन को बरी कर दिया जिस पर चर्चा करते हुए शिबू सोरेन ने कहा "मेरे जैसा निर्दोष को चार्ज शीट किए बिना 4 माह तक जेल में रखा गया यहां अरबों खरबों रुपए का घोटाला हो रहा है लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हो रही है " शिबू सोरेन ने भावुक अंदाज में कहा मैं पूछता हूं " क्या शिबू सोरेन चोर हो सकता है?" फिर वह अपने ही सवाल का जवाब देते हुए कहते हैं "कभी नहीं" फिर शिबू सोरेन ने कहा "मैं अब बाहर जा रहा हूं और झारखंड आंदोलन को और तेज करूंगा लोगों को बताऊंगा किस तरह से लोगों को गलत ढंग से फसाया गया है।"[17]

निष्कर्ष

झारखंड मुक्ति मोर्चा एक ऐसा संगठन रहा है जो अंतिम 4 दशकों से झारखंड का एकमात्र सक्रिय राजनीतिक दल है तथा वर्तमान तक भी झारखंड को विकास की ओर ले जाने में प्रयासरत् है।

झारखंड मुक्ति मोर्चा अपने राजनीतिक कार्यक्रमों रणनीतियां से आदिवासी तथा गैर आदिवासियों को एकजुट करने का कार्य किया है, जिससे झारखंड का आंदोलन सफलता की ओर अग्रसर हुआ तथा सभी एकजुट होकर सामाजिक बुराइयों को दूर करते हुए विकास की ओर बढ़ने लगे। चुंकि झारखंड के निवासी आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक रूप से काफी पिछड़ा हुआ करता था तथा निरीक्षण होने के कारण वे शोषण का शिकार भी हो रहे थे एवं सामाजिक बुराइयों के दलदल में वह डूबते जा रहे थे। शिबू सोरेन और झारखंड मुक्ति मोर्चा ने उन्हें एक नई समाज की ओर रास्ता दिखाने का कार्य किया है तथा झारखंड मुक्ति मोर्चा ने झारखंड राज्य निर्माण आंदोलन को सफलता तक पहुंचाने का प्रयास किया है, जिससे आज झारखंड का अस्तित्व एवं जनजाति समाज का विकास हो रहा है। झारखंड की जनजाति पुरुष, महिलाएं आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्रों में बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रहे।

अगस्त 2000 में झारखंड को एक अलग राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ जिसका प्रथम मुख्यमंत्री एक जनजातीय समाज से उठ कर आए बाबूलाल मरांडी बने और यह भी एक बड़ी विडंबना है की शिबू सोरेन को कभी पूर्ण कार्यकाल के लिए मुख्यमंत्री बनने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ, किंतु उन्हें इस बात की तनिक भी अफसोस नहीं है एवं वर्तमान में झारखंड मुक्ति मोर्चा की सरकार है जिसमें माननीय मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जी हैं।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि, झारखंड मुक्ति मोर्चा लोगों का एक ऐसा संगठन है जो

पिछले कई दशकों से झारखंड के जनजातीय समाज तथा गैर जनजातीय समाज को विकास की राह पर ले जाने का कार्य कर रहा है एवं झारखंड के आंदोलन में हमेशा आगे रहा है, चाहे वह आंदोलन सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए हो या फिर झारखंड अलग राज्य निर्माण को लेकर हो, झारखंड मुक्ति मोर्चा सदा ही झारखंड के गरीब पिछड़े एवं वंचित और जनजातीय समुदाय के विकास के लिए कार्यरत रहा है।

संदर्भ सूची

1. *झारखंड मुक्ति मोर्चा संविधान,* धनबाद, पृष्ठ– 2।
2. दत्त बलवीर, *कहानी झारखंड आंदोलन की इतिहास से साक्षात्कार,* क्राउन पब्लिकेशन, रांची 2014, पृष्ठ –185।
3. सिन्हा अनुज कुमार, *दिशोम गुरु शिबू सोरेन,* प्रभात पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2020 पृष्ठ –34।
4. वही, पृष्ठ –35।
5. वही, पृष्ठ –36।
6. सिन्हा अनुज कुमार, *झारखंड आंदोलन का दस्तावेज, शोषण, संघर्ष और शहादत,* पृष्ठ – 71।
7. *झारखंड मुक्ति मोर्चा,* संविधान, धनबाद, पृष्ठ – 6।
8. वही, पृष्ठ – 7।
9. तलवार वीर भारत, *झारखंड आंदोलन के दस्तावेज,* नाबारुण पब्लिकेशन, उत्तर प्रदेश, 2017, पृष्ठ – 213।
10. सिन्हा अनुज कुमार, *दिशोम गुरु शिबू सोरेन,* प्रभात पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 60।
11. *झारखंड मुक्ति मोर्चा संविधान,* धनबाद, पृष्ठ – 3।
12. सिन्हा, अनुज कुमार, *दिशोम गुरु शिबू सोरेन,* प्रभात पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ – 61।
13. Xalxo Abha, Aims and Achievement of Jharkhand Mukti Morcha (1973-200) Proceedings of the Indian History Congress, vol 64 PP. 1091-1102. https://www.jstore.org/stable/44145536
14. सिन्हा अनुज कुमार, *झारखंड आंदोलन के दस्तावेज, शोषण, संघर्ष और शहादत,* पृष्ठ – 354।
15. सिन्हा अनुज कुमार, *दिशोम गुरु शिबू सोरेन,* पृष्ठ – 62
16. तलवार वीर भारत, *झारखंड के आदिवासियों के बीच एक एक्टिविस्ट नोट्स,* पृष्ठ – 493।
17. पूर्वोक्त, *कहानी झारखंड आंदोलन की इतिहास से साक्षात्कार,* पृष्ठ – 416।

****